

मि-इड-किट ए विधेय वला शहेजे - अबलोकित शुत्रेर पद्मावति अनुमाने इर्हर्वर्ण
'शहाराणु' उपार्दि ग्रन दृढ़न नि। अबुं छनीदृष्ट शिंशामाने आग्राहन दृढ़न नि,
तिनि शुत्रै मात्र 'रान्धपुद्र' एवं अविर्गी ग्रन दृढ़न।

उपर्युक्त वानस्त्रे लिखेहन - अरबर्मनेर मुख्यर पर दीनेक 'शुत्र'
छनीदृष्ट शिंशामान आग्राहन दृढ़न। अबुं अप्प दिक्षु धान शल उ छनीदृष्ट तर्ह अविर्गीते
दिल। ए हजार नालका औलमेहर आउ धान थाय - अरबर्मनेर मुख्यर पर ऊंच छनीयी
द्राश शूरसेन छनीदृष्ट शिंशामान आग्राहन दृढ़दिलन। ए लग्ने रिउदेन झाँड - अव-
विवेनेर लितिते देन मात्रे वला यात्रा देन, बाघर्वर्णिण मुख्यर परेह छनीदृष्ट अमानु-
देह अनुरोधे इर्हर्वर्ण छनीदृष्ट शिंशामान आग्रेहन दृढ़दिलन।

ए फ्रेजे फ०५-८०-८०-९ विवेनेर लितिते अनुमान धारा शहेजे देह
इर्हर्वर्ण अप्पमा छनीदृष्ट रान्धपुद्रमण्ड द्वारीदृष्टदृष्ट द्वारीदृष्ट वाधाय दृष्ट रान्धपुद्रीर अपिनिर्वि
हिमाये छनीदृष्ट झासन करते थाक्केन। फ०८ छनीदृष्ट निच॑ झैमता॒ ओ अपिनिर्वि दृष्ट द्वाव प्रतिचिठ्ठ
मुख्यर पर तिनि अनुसूतानिय लेह 'किलादित्रु' उपार्दि ग्रन दृढ़न, ए लग्ने 'रान्धपुद्र' इर्हर्वर्ण
झासौ इर्हर्वर्णे दाबिनिट देन।

इर्हर्वर्ण ओ जाणाई:

वानस्त्रे लिखेहन - विक्ष्यायले रान्धपुद्रीके देहाय अस्याय पर इर्हर्वर्ण जाणाईरे
१. विधेय उप्रमम ११० छनीदृष्ट देन लोहान। दिक्षु जाणाईरे झाँटे ऊंचे देन भुद्द रुद्दहिन चि
नि दिंवा भुद्द शल उ उ भुद्द भल उ ११० दिल - ए विधेय वानस्त्रे देन छोटे लोहेन नि,
रिउदेन झाँड अ विधेय झाँटे दृष्ट दिक्षुर बलेन नि। ए मात्रावभुद्द अनुमानेर लितिते
उतिरामिये इर्हर्वर्ण ओ जाणाईरे झासौ निच॑ द्वेष शहेजे। R.S.Tripurathi लिधेह-
इर्हर्वर्णेर बाटी छनीदृष्ट मान्धाटेर देहीदाने जाणाईरे ज्ञानी झाँट धारा। मुरुरु
जाणाई मिर दृढ़दिलन - लोट यन्है शत बडु दृष्ट अलम्भित छनीदृष्ट उत्रे - मन्मुचमादित्य
भेद अज्ञा इर्हर्वर्णिण बाटी धर्यु द्वारा धाग्गे अज्ञा उत्तरे बम्भित बाटीर
अम्भुषीन इत्तिर ऊंच विमर्द्दित छाँन ११० चित्ते दाढ़, ए अङ्गन तिनि छनीदृष्ट
उत्तरे अस्त्र अज्ञा उत्तरे ज्ञानी ज्ञानी धारा। रान्धपुद्रे मन्मुचमाद, ज़ॉ तिकोनी ओ तः
ज्ञानादार्यादृष्ट अलिमत झासौ दृढ़न नि। नालका औलमेहर दृष्ट तिनि छाँट तिनि लिधेह-
जाणाईरे छनीदृष्ट अविद्येर धर्यु उत्तरे अम्भुषीन छाँट। ज़ॉ दृढ़ छनीदृष्ट उत्तरे
जाणाईरे अरबर्मनेर अलिमत दृढ़ निच॑ द्वेष देन उ द्वे-द्वात्र निच॑ उत्तरे भूमित्रु सूपारा॒ विधेय -
७० देहेन।

'कर्मिण्डुक्ती ज्ञानदृष्ट' वला रुद्दहे - इर्हर्वर्ण कर्मिण्डुक्ती अनुमान
७० जाणाईरे दर्शाच्छि दृढ़न धर्यु तिनि जाणाईरे धर्यु झाँट उत्तरे रम्भ
दृढ़न भ्र, ज्ञात्वादृष्ट निच॑ द्वेष दृष्ट देन उ द्वे-द्वात्र निच॑ उत्तरे भूमित्रु सूपारा॒ विधेय -
(2)

বিশ্ববৰ্ষ বার্ষি। হিউম্যেন জনও লিখেছেন— মাত্তু আরও শুত কৈল মুংগুড় দ্বাৰা রূপ্সুলভোজীয় বিস্তৃত পুঁচু মুগ্ধ গুড়েন, V.A Smith লিখেছেন— এম্বিসনেজেস অনুষ্ঠিত পুঁচু রূপ্সুলভোজীয় মাত্তু আরও শুত কৈল মুগ্ধ লিখেছেন— উক্তগুলি, মালতি ইন্দুর বিশ্ববৰ্ষ মাত্তু মাত্তু চায় গোড়ে বেশসূচিত ছিল। এ বগুর রূপ্সুলভোজী নামে একটি বেশ পুরুষ মুগ্ধ মুগ্ধ জন্মগ্রহণ কৈল এবং কামুয়া কৈল এবং,

ইংৰিজৰ একটি লিখু, কামুয়া ও নেদাল :

বান্দ্যো লিখেছেন— রূপ্সুলভোজী মাত্তু আরও শুত কৈল গোলাফ্বী পুঁচু
চূঁচু ছিলো। তিনি হিউম্যেন জনও লিখেছে জামারাদুর বিনোদ কৈল পুঁচু ছুঁচু কৈল এবং রূপ্সুলভোজী— লিখু নামে রূপ্সুলভোজী কৈল রূপ্সুলভোজী বাবুলে ও সামাজি মুগ্ধ পুঁচু পুঁচু তিনি এন মীন ২৫ না এবং মাত্তু পুঁচু পুঁচু কৈল, কামুয়া, তিনি পুঁচু কৈল কৈল পুঁচু পুঁচু পুঁচু কৈল কৈল কৈল কৈল, এই প্রয়োগ R.K Mukherjee বলেন—
“with all possible reservations it cannot --- of the whole
of Northern India.”

ইংৰিজৰ শাসনঃ

‘আইছেল’ নেঁধত ইংৰিজ ‘অফিলোডিপন্থনান্ড’ পুঁচু অফিলোডিপন্থনান্ড লিখিত রূপ্সুলভোজী ইংৰিজ শাসন কৈল এবং কৈল।
প্ৰশ়ঁসিত জামারাদী চৰকলে মাত্তু ছিল— শানমুহু (পুরুষপুকুল), পুলোচু, অহিজুচু,
আৱলী (অশোকুচু), মজুচু, উড়িচু, কৃষ্ণেল (কৃষ্ণমুল) এবং জোচু (পুশ্চিমালুচু), তোচু
ইংৰিজ প্ৰজাৰৰীন চৰকল কৈলো ইল— কৌমুদুচু, বৰমাচু এবং এটো কৌমুদু কৌমুদু।
এছাড়া কামুয়া ও ছুলকুৰ চৰ্চাৰ মামুগুচু প্ৰজাৰীন চৰকলে কৈলো ইল দিলেন, উল্লেখ
আছে কে সমস্ত বামুয়া বামুয়া ও ধোনীচু ও প্ৰজাৰীব কথামুলনে কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো।

ইংৰিজ শাসন দৰিদ্ৰ সুবি঳াস কৌমুদু কৈলো মেঘিপু কৈল
বিদো খাইত পাইুন না, কৈলো চৰ্চাৰ পুৰুষ কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো—
‘অফিলোডিপন্থনান্ড’ লিখেৰে জীবন দাঁচুনে, চৰকল কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো
বিদো কৈলো বিদো কৈলো
কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো কৈলো

The End

Lokeswar Manna

(Dept. of History)